: तृतीय अध्याय :

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रुप

: तृतीय अध्याय :

'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रुप'

3.1 नारी का महत्व

3.2 नारी के विविध रुप

3.2.1 नारी के पारिवारिक रुप

3.2.1.1 माता

(अ) वात्सल्यमयी माता

(आ) व्यभिचारिणी माता

3.2.1.2 कन्या एवं पुत्री

3.2.1.3 पत्नी -

(अ) पतिव्रता पत्नी

(आ) पतिता पत्नी

3.2.1.4 सास

3.2.1.5 बहू

3.2.1.6 देवरानी-जिठानी

3.2.1.7 भाभी

3.2.1.8 प्रेमिका

(अ) सफल प्रेमिका

(आ) असफल प्रेमिका

3.2.1.9 सखी तथा सहेली

3.2.1.10 विधवा

3.2.2 नारी के परिवारेतर रुप

3.2.2.1 दासी

3.2.2.2 कलंकिता

3.2.2.3 कातिल तथा हत्यारिन

3.2.2.4 कैदी

3.2.3 नारी के शाश्वत रुप

3.2.3.1 सुसंस्कारित एवं सहनशील

3.2.3.2 त्यागमयी तथा स्वाभिमानी

3.2.3.3 अपमानित किंतु पवित्र

3.2.3.4 असहाय तथा निर्भिक

3.2.3.5 विद्रोही एवं आधुनिक

3.1 नारी का महत्त्व :-

"भारतीय संस्कृति में नारी की महत्ता को उच्च स्थान दिया गया है। विभिन्न धर्मग्रंथों में भी नारी को गृहस्थाश्रम का मूल आधार माना गया है। इसी कारण भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित है। पुरुष से भी ज्यादा नारी-मर्यादा को उत्कृष्ट माना गया है।"[1] नारी परिवार तथा समाज दोनों के विकास में अपना पूर्णतः योगदान देती है। नारी से ही परिवार बनता है, मनुष्य का उगमस्थान नारी को ही माना जाता है नारी से ही घर की शोभा बढ़ती है। नारी ही मनुष्य का पालन करती है, उसका विकास करती है। शिक्षित हो या अनपढ़ अपने परिवार तथा समाज को आदर्श बनाने में अपना तन-मन समर्पित कर देती है इसी कारण नारी को आदरणीय माना जाता है। नारी को सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। पुरुष के हर कार्य में स्त्री अपना सहयोग देती है, सहकार्य करती है, इसीलिए नारी को प्रेरणा स्त्रोत भी कहा जाता है। हर क्षेत्र में नारी पुरुष को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से प्रेरित करती है। पुरुष नारी से प्रेरणा पाकर संसार के कठिन से कठिन कार्यों में भी सफलता हासिल करता है। अतः नारी उदारता, सेवा, सहृदयता, शक्ति आदि अनेक उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण होती है। नारी की महत्ता को स्पष्ट करते हुए महादेवी वर्मा जी ने लिखा है, "मानव समाज ने परिवार की कल्पना के साथ नारी की महत्ता को स्वीकार कर लिया था। पुरुष के समान स्त्री भी कुटुंब, समाज, नगर तथा राष्ट्र की विशिष्ट सदस्या मानी जाती है।"[2] नारी अपने स्नेह, मातृत्व, सतीत्व, समर्पण, बलिदान आदि अनेक गुणों के कारण समाज तथा पुरुष के जीवन में अपना स्थान प्राप्त कर चुकी है इसी कारण समाज में उसे सम्मान प्राप्त हुआ है।

3.2 नारी के विविध रुप :-

पुरुष के समान नारी को भी समाज का एक अविभाज्य अंग माना जाता है। नारी समाज में जन्म देनेवाली, पालन करनेवाली-माता, स्नेह करनेवाली-बहन तो कभी पत्नी के रुप में आती है। इन विविध रुपों में नारी यथायोग्य अपना कार्य निभाती है, और परिवार तथा समाज में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान प्रस्थापित करती है। नारी का परिवार में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। नारी अपने विविध रुपों में पुरुष की नजर में तथा समाज में अपना एक आदरयुक्त स्थान प्राप्त करती है। आज-कल हर क्षेत्र में पुरुष के सहायक के रुप में तथा पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलनेवाली सहयोगिनी, सहधर्मिनी के रुप में नारी के दर्शन होते हैं। नारी अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक विषमता या परिस्थिति के कारण परिवार तथा समाज में विविध रुपों में सामने आती है। साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नारी के विविध रुपों को दर्शाया है। कहानी, नाटक, उपन्यास आदि में नारी विविध रुपों में हमारे सामने आती है। डॉ.रांगेय राघव जी के 'राई ओर पर्वत', 'पतझर' तथा 'कल्पना' उपन्यासों में नारी के पारिवारिक, परिवारेतर तथा शाश्वत रुप चित्रित हुए हैं, जो नारी की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत कर अपना एक विशिष्ट प्रभाव पाठक पर डाल देते हैं। राघव जी ने इन नारियों के विविध रुपों के सहारे उनमें स्थित विविध गुणों एवं पहलुओं को समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

3.2 नारी के पारिवारिक रुप :-

नारी का परिवार में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। अपने विविध रुपों के साथ नारी परिवार का विकास करती है। राघव जी ने अपने उपन्यासों में नारी के पारिवारिक रुपों में सास, बहु , देवरानी, जेठानी, प्रेमिका, सहेली आदि का यथार्थता के

साथ चित्रण किया है ।

3.2.1.1 माता :-

माता के नाम से एक ममता से भरी, करुणामयी, आदरणीय स्त्री आखों के सामने आती है, जो अपने वात्सल्यमयी रुप से अपनी संतान का जीवन सँवारती है। माँ अपनी संतान को बहुत चाहती है। नारी के विविध रुपों में 'माता' रुप को सबसे महान तथा गौरवशाली माना जाता है। माता रुप के बाद ही स्त्री-जन्म सार्थक माना जाता है। माता रुप वात्सल्य तथा ममता से परिपूर्ण होता है। किंतु कभी-कभी व्यक्तिगत स्वार्थ, वैचारिकता के कारण माता का व्यभिचारी रुप भी दिखाई देता है। राघव जी के उपन्यासों में नारी के वात्सल्यमयी रुप के साथ व्यभिचारी रुप भी प्रस्तुत हुआ है।

(अ) वात्सल्यमयी रुप :-

"वत्सलता भी मातृ हृदय का प्रमुख गुण है, जो न्युनाधिक्य मात्रा में सभी माताओं में स्वाभाविक रुप में विद्यमान रहता है। संतान के प्रति कार्य - हिलाना, डुलाना, स्नान कराना, भोजन खिलाना आदि क्रियाओं से अभिव्यक्त होता है। संतान के प्रति इन सभी कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी हर्ष का अनुभव करती है।"[3] माँ की यह कामना होती है कि, उसकी संतान जीवन में हमेशा उन्नति करे और सुखी रहे। इसीलिए वह संतान को बचपन से ही सुसंस्कारित बना देती है। उसके आचार-व्यवहार पर ध्यान देती है।

'कल्पना' में नीला की पड़ोसन श्रीमती सुंदरम अपनी बेटी 'राजम' को बहुत चाहती है। नीला को देखकर उन्हें अपनी बेटी की याद आती थी। श्रीमती

सुंदरम आठ बच्चों की माँ बनी थी, परंतु भगवान ने एक को भी नहीं बचाया था इस दुख से वह भगवान को कोसती रहती है। "नीला ओर राजम में जमीन-आसमान का फर्क था रंग में, सूरत में दोनों बहुत ही अलग थी जैसे नीला उठती भोर थी तो राजम डूबती सांझ। फर्क इतना, जितना दक्षिणी अमरिका और अफ्रिका के नक्शों में होता है।"[4] समानता थी कि वे दोनों ही स्त्रियाँ थी। फिर भी माँ की ममता भरी नजर अपने बच्चे की उम्र के हर बच्चे में अपनी संतान को देखती है, याद करती है। श्रीमती सुंदरम नीला में राजम को देखती है।

माँ का हृदय यहीं चाहता है कि, अपनी संतान सुखी रहे अधिकतर कन्या के संबंध में माँ को विशेष चिंता लगी रहती है कि, भविष्य में अपनी कन्या को ससुराल, पति न जाने कैसा मिलेगा? और इसी चिंता के कारण माँ अपनी बेटी के लिए सुयोग्य वर ढूँढती है और उसके साथ बेटी का विवाह करती है, ताकि भविष्य में बेटी किसी बात से वंचित न रहे, उसे हर तरह का सुख मिले। श्रीमती सुंदरम ने भी अपनी बेटी के लिए ऐसा ही वर ढूँढ़ा है। राजम का पति दिल्ली में 'ए' ग्रेड ऑफिसर है। अपनी बेटी के सुख से ही माँ को खुशी मिलती है। माँ अपनी संतान को बहुत चाहती है, चाहे वह सुंदर हो या कुरुप हो।

'राई और पर्वत' में फूलवती भी अपनी बेटी विद्या से बचपन में बहुत प्यार करती थी। विद्या रोती थी तो उसे बगल में सुलाकर सारी रात जागती हुई पंखा करती थी। धूल में खेलने पर माँ विद्या को मारती थी परंतु कुछ ही क्षण बाद वह विद्या को लोरी सुनातें-सुनाते दूध पिलाती थी दृष्टव्य है, "ले बिटिया, दूध पी ले। देख, चंदा मामा आएंगे, लल्ली के बिस्तर पै उतरेंगे..... चंदा मामा दूर के।"[5] फूलवती, विद्या को बहुत प्यार करती थी। परंतु परिस्थितिवश तथा व्यक्तिगत स्वार्थ

के कारण फूलवती का वात्सल्यमयी ह्रदय एक व्यभिचारी बन जाता है, जो अपनी बेटी को इतना प्यार करती थी, वही माँ, अपनी बेटी को गलत रास्ते पर लाना चाहती है।

ब) व्यभिचारिणी :-

फूलवती अपनी बेटी का विवाह बारह साल की उम्र में ही करती है। बेटी को घर में रखना उसे एक बोझ सा लगता है इसलिए बेटी का विवाह कर वह बोझ से मुक्त हो जाती है। विद्या के विवाह को चार साल बीत जाते हैं, किंतु इन चार सालों में माँ ने बेटी को एक बार भी तीज-त्यौहार के लिए नहीं लाया था। विद्या विवाह के चार साल बाद ही विधवा होती है और ससुरालवालों के अन्याय से थककर मायके आती है। घर आते ही माँ का गहनों से सजा हुआ रुप देखा जो अपनी विधवा बेटी को देखकर न दुखी हुआ था और न गले लगाकर रोई थी। फूलवती को देखकर नहीं लगता कि, वह एक विधवा की माँ है। विद्या को मायके वापस ले आना फूलवती के मन को बुरा लगता है। उसका कथन है; "स्त्री तो जहां ब्याह गई, वहीं से उसकी लाश निकले तो भला। मेरे पेट की जनी है, पर लोक-मरजाद तो है ही। सो क्या हम डिगा सकेंगे, जो राजे-महाराजों से न डिगी। लड़कीवालों का ठसक से काम चल जाएगा?"[6] फूलवती के मत से विद्या को ससुराल में ही रखना चाहिए था, क्योंकि विद्या के आने से हरदेव और फूलवती के बीच एक दीवार सी बन गई थी। विद्या को फूलवती, हरदेव का परिचय करवाती है कि, हरदेव तेरा मामा है, जबकि हरदेव और फूलवती में प्रेमसंबंध है। विद्या के आने से फूलवती को बंधन सा लगता है। वह विद्या को हटाने के लिए नई-नई चालें चलती है। रामभरोसे के साथ विद्या का पुनर्विवाह करना चाहती है, परंतु विद्या पुनर्विवाह का कड़ा विरोध करती है।

विद्या अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है, परंतु फूलवती उसका विरोध करती है। विद्या के मन को मास्टरनी पेशे के विरोध में भड़का देती है। फूलवती अपने प्रेम संबंध को विद्या से छुपाने के लिए विद्या को भंग मिलाया हुआ प्रसाद खाने के लिए देती है, जिसे खाकर विद्या, रामभरोसे के हाथ से अनजाने में रबड़ी चखती है और पिता, गांववालों के सामने पकड़ी जाने के कारण पापिन, कलंकिनी मानी जाती है। विद्या को सारा गांव तथा पिता दोषी मानते हैं, परंतु फूलवती अपने झूठे वात्सल्य से विद्या की गलती पर पर्दा डालने का बहाना करती है। विद्या को अपने बनावटी, ढोंगी प्रेम से धीरज देती है जैसे - फूलवती अपने पति के गुस्से को शांत कराने के लिए कहती है, ''कोई नहीं थूकेगा, जो तुम न फैलाओगे। अपनी बच्ची है। गलती हो भी गई तो पीना ही पड़ेगा। तुम्हें मेरी कसम जो मेरी बेटी से कुछ भी कहा। मैंने कहा था कि पुनरविवाह कर दो, तब यह न मानी और अब चली नाक कटाने।''[7] जब फूलवती समझ जाती है कि अब विद्या को हटाना मुश्किल है, तो वह अपने ढोंगी वात्सल्य, ममता से विद्या के साथ प्यार भरा बर्ताव करने लगती है, विद्या के मन में अपने लिए आदर भाव निर्माण करती है। बेटी को माँ का रुप दिखाने के लिए सारे साज-सिंगार छोड़ एक बैरागन की तरह सीधी-साधी रहने लगती है, घर के काम में हाथ बंटाती है, विद्या की तबीयत का खयाल रखना चाहती है। फूलवती रोज रात विद्या को दूध डाँट-फटकार कर पीने को कहती है, जिसमें नशे का चूर्ण मिलाया हुआ है ताकि दूध को पीकर विद्या रात में न जागे और अपने और हरदेव के प्रेमसंबंध का रहस्य बना रहे। परंतु एक दिन विद्या को दूध में चूर्ण न मिलाने की भूल से अपनी माँ के अनैतिक संबंध का पता चलता है, जिससे विद्या, माँ से घृणा करने लगती है। दोनों में झगड़े होते रहते हैं। परंतु विद्या की पूर्व बदनामी के कारण वह चूप ही रहती है, तो फूलवती अपनी बेटी को

रामभरोसे के साथ अनैतिक संबंध के लिए उकसाती है। संतप्त होकर विद्या माँ के सबंधों का राज खोलना चाहती है तो माँ अपनी बेटी की जान लेने पर उतर आती है। रामभरोसे को बुलाकर विद्या की पवित्रता को नष्ट करना चाहती है। फूलवती का कथन है, "मुझसे उड़ने की चाल न चल लड़की। तेरा पता न चलेगा। लाश गायब करा दूंगी। देख, यह कौन आया है? अभी जगार करती हूँ सब जगह। सवेरे तक तुझे कुएं में डूबने की नौबत आ जाएगी।"[8] फूलवती अपनी बेटी की लाश को चील-कौओं को खिलाने की धमकी देती है। परंतु विद्या अपनी पवित्रता की शक्ति को अपने से अलग नहीं करती है। उसी के सहारे अपनी माँ के प्रति अपना विरोध अटल रखती है। और फूलवती अपने अपवित्र चरित्र से अपनी बेटी की पवित्रता को नष्ट करने का अंत तक प्रयास करती है, किंतु अपने अनैतिक संबंधों का राज पति के सामने खुलने के कारण वह अपने मृत पति के साथ सती जाती है ताकि समाज में स्थित अपनी पतिव्रता की छाप बनी रहे।

3.2.1.2 कन्या एवं पुत्री :-

"नारी जीवन में कन्या एवं पुत्री रुप उसके जीवन का सोपान है जो उसके शैशवावस्था और किशोरावस्था का परिचायक है। नारी, विवाह से पूर्व अल्पायु तक कन्या रुप में देखी जाती है और विवाह उपरांत वह युवती होकर माता-पिता के लिए पुत्री ही मानी जाती है; किंतु उसे कन्या रुप से नहीं देखा जाता।"[9] कन्या या पुत्री का रुप परिवार में प्रेम, ममता, वात्सल्य, स्नेह का पात्र होता है। माता-पिता के अमिट प्रेम को पानेवाली पुत्री भी उतना ही प्रेम अपने माता-पिता पर करती है। जैसे – माँ-बाप के अपने पुत्री के प्रति कुछ कर्तव्य होते हैं उसी तरह पुत्री के भी अपने माँ-बाप के प्रति कुछ कर्तव्य होते हैं, अपने माँ-बाप के सुख-दुख का ध्यान रखना

पड़ता है उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ता है, उनकी मान-मर्यादा तथा भावनाओं को ठेस न पहुँचे इसका खयाल रखना पड़ता है।

'राई और पर्वत' में विद्या अपने कन्या एवं पुत्री रुप से तथा अपने चंचल, एवं सुसंस्कृत स्वभाव से माता-पिता को हर्षित करती है। विद्या जब छोटी थी तब वह अपने चाचा की प्यारी थी, अपने चाचा की गोद में बैठकर कौओ को अपने छोटे-छोटे हाथ से बुलाती थी। चाचा ने ही प्यार से 'विद्या' नाम रखा था। चाचा बाहर से आते समय कभी खाली हाथ नहीं आते थे, मिठाई जरुर लाते थे। विद्या आंगन में किलकारियाँ मारकर दौड़ती। माँ पकड़ने आती थी विद्या दौड़कर बाहर निकल जाती थी, रास्ते पर दोनों छोटे-छोटे हाथों से धूल उठाकर बालों में डालते हुए कहती थी गंगा-गंगा.......।''[10] पड़ोस की ताई और काकी विद्या को उठाकर गोद में खिलाती थी। माँ को वह बहुत तंग करती थी, पिता के खाट के नीचे छुप जाती थी, माँ ढूँढ़ती तब पिता को मालूम हो जाता कि विद्या खाट के नीचे है तो वे विद्या को दो टांग की बिल्ली कहकर बाहर निकालते थे। बचपन में विद्या चाचा के पास ही सोना चाहती थी अपने तोतले बोलों से कहती, हम तो यही छोएंगे, चाचा के पाछ। विद्या को अपने बचपन की याद से बड़ा दुख होता था।

विद्या अपने वैवाहिक जीवन में ससुराल के सम्मान का पालन कर अपने मायके की शान को बढ़ाए रखती है। परंतु विवाह के कुछ वर्ष बाद उसे विधवा जीवन अपनाना पड़ता है। ससुराल से अपनी इज्जत को बचाए, अन्याय से थककर मायके आती है। मायके में भी इज्जत से रहकर अपने माता-पिता की मानमर्यादा को बढ़ाना चाहती है किंतु वहां भी उसकी किस्मत साथ नहीं देती। माँ ही अपनी बेटी को गलत रास्ता अपनाने को कहती है, परंतु विद्या उसके लिए इन्कार करती है। माँ

के जुल्म को, मार को सहते, पिता की गालियों को सुनते, गांववालों के दुर्व्यवहार को सहते अपना जीवन बिताती है, परंतु अपनी माँ की भ्रष्टता को छिपाए रखती है। विद्या, 'माँ' इस रुप को महान तथा पवित्र मानती है। इसी कारण अपनी दुराचारी माँ के प्रति एक भी बुरा लब्ज नहीं निकालती। उसका कथन है,''माँ संसार में सबसे पवित्तर होती है'। 'उसने मुझे छाती से लगाकर दूध पिलाया था। दुनिया कहती है कि माँ से बड़ा कोई नहीं माना जाता है, जो अपनी मां के ऊपर आंच लाए, उससे तो रास्ते का कुत्ता भी अच्छा होता है। मरकर उससे मिलूंगी तो सरम से सिर तो नीचा नहीं होगा मेरा।''[11] विद्या अपने कर्तव्य का पालन करती है, उसे अपनी माँ के दूध का एहसास है इसी कारण वह अपनी माँ को बुरा नहीं कह सकती, माँ का स्थान भगवान से भी ऊँचा मानती है।

'पतझर' की मोहिनी भी अपने माँ-बाप के प्रति एकनिष्ठ रहना चाहती है। उनकी मान-मर्यादा की खातिर अपने प्रेमी को भूलाना चाहती है, उससे संबंध तोड़ देती है। परिणामतः मानसिक रुग्ण बन जाती है वह इलाज के रुप में बिजली के झटके सह लेती है, परंतु पिता से अपने प्रेम संबंधों को छुपाके रखती है, अपने गूंगेपन में दबाके रखती है। डॉक्टर, जब मोहिनी को अपनी इच्छानुसार जीवनसाथी चुनने के लिए प्रेरित करते हैं तो, मोहिनी के सामने अपने कर्तव्य आ जाते हैं मोहिनी अपने माता-पिता की मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहती। उसका कहना है, ''डॉक्टर साहब, उन्होंने मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया है।''[12] मोहिनी इच्छित लड़के के साथ शादी करने में माँ-बाप के प्रति नीचता समझती है। मोहिनी के मत से अगर अपनी संतान का पालन करने के बदले वे अपनी संतान का विवाह अपनी मर्जी से कर एहसान को चुकाना चाहते हैं तो मोहिनी इसके लिए भी तैयार है। अगर माता-पिता की मर्जी के खिलाफ शादी करने से उन्हें दुख होता होगा तो मोहिनी

उनकी मर्जी का विरोध नहीं करना चाहती और यही माता-पिता के प्रति कर्तव्य को मानकर उसका पालन करना चाहती है।

3.2.1.3 पत्नी :-

पुत्री को विवाहोपरांत पत्नी के रुप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ती है। विवाह के बाद नारी पुरुष की पत्नी रुप में अपना जीवन बिताती है। डॉ. श्यामबाला गोयल ने नारी के पत्नी रुप को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''नारी युगों-युगों से पुरुष की सहधर्मिणी और सहचरी के रुप में मानी जाती रही है। पत्नी, पति से अभिन्न, सुख-दुखों की सहभागिनी, परामर्शदात्री, जीवन विलास की सहचरी, सेवाकाल की दासी के समान अपनी प्रेम सुधा से पति-जीवन को रसमग्न करके उसी में लीन हो जानेवाली गौरवशालिनी रही है। वह आत्मोत्सर्ग, प्रेमानुभूति, कर्तव्य-परायणता और त्याग की साक्षात मूर्ति है। पत्नी, गृह और परिवार की कल्पना में सरसता एवं मधुरता का वर्णन करनेवाली गृह-लक्ष्मी मानी जाती है। उसका अपना सुख सदैव पति सामिप्य में ही होता है।''[13] राघव जी के उपन्यासों में पत्नी के पतिव्रता रुप के साथ-साथ पतिता रुप भी चित्रित हुआ है।

अ) पतिव्रता :-

पतिव्रता नारी अपने पति को परमेश्वर मानती है उसकी पूजा करती है। उसके सुख-दुख को अपना मानती है। पति के हर कार्य में उसका साथ निभाती है इसीलिए उसे अर्धांगिनी माना जाता है। इसी अर्धांगिनी रुप की स्पष्टता के लिए पुरातनकाल के महापुरुषों के नाम के साथ उनकी पत्नी का नाम भी जोड़ा गया है जैसे - उमा-शंकर, राधे-श्याम, सीता-राम, लक्ष्मी-नारायण आदि। पतिव्रता नारी हर

वक्त अपने पति के सुख की कामना करती है। वह मानसिक तथा शारीरिक रुप से जैसे आत्मदान करती है। पति की गलतियाँ, अपराध आदि को माफ करती है। उसके अत्याचारों को चुपचाप सहती है। इसी कारण कभी-कभी पत्नी को अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को दबाना पड़ता है। पत्नी के सपने चूर-चूर हो जाते हैं, फिर भी वह अपने पति का विरोध नहीं करती।

'कल्पना' उपन्यास में 'नीला' भी अपना पूर्ण आत्मसमर्पण पति के प्रति करने के लिए तैयार है। नीला एक संस्कारित नारी होने के कारण वह अपने पति को परमेश्वर मानती है। परंतु नीला को, पति से प्यार नहीं मिलता क्योंकि वह एक दूसरी युवती से संबंध रखता है, फिर भी नीला पति का विरोध नहीं करती। उसे अपने पति से कोई आशा-आकांक्षा नहीं है। वह अपने पति की गलतियों पर पर्दा डालती है। पति, पराई स्त्री को सिनेमा देखने ले जाता है, उसके साथ घूमता-फिरता है। नीला मन में घुटती रहती है, परंतु चेहरे पर उसकी झलक नहीं दिखाती। पति के पूछने पर नीला कहती है, ''जितना अधिकार मिलेगा, उतना ही तो लूंगी। जितना मेरे लिए नहीं है, उतने की मुझे आशा ही क्यों करनी चाहिए। उसके न मिलने पर तो अधिक ही दुःख होगा न?''[14] नीला पति से सुख की आशा भी नहीं करती। अपने पति से मिलने आयी प्रेमिका को घर में बुलाकर पति की मुराद पूरी करने की इजाजत देती है। नीला का कथन है, ''जितने दिन का यह प्रेम है, उसका आवेश पूरा हो जाने दो, अन्यथा इसका जो भी अंश मेरा है, वह भी मेरे हाथ नहीं आ पाएगा।''[15] पति के प्रेमसंबंध पर नीला को कोई एतराज नहीं है। नीला का पति, नीला को एक पराई औरत समझता है नीला के साथ पत्नी जैसा व्यवहार करने में वह व्यभिचार मानता है। राजम, नीला के पति को बुरा-भला कहती है, तो नीला राजम को चुप कराती है। नीला पति की बदनामी में अपनी बदनामी मानती है। अपने पति के विवाहबाह्य

संबंध को छुपाना चाहती है। नीला की जिंदगी निराश, घुटनभरी, अंतर्द्वंद्व से घिरी रहती है। नीला की आशा-आकांक्षा पति के इर्द-गिर्द ही सिमट जाती है।

'अवदातिका' से महान पतिव्रता तथा आदर्श नारी 'सीता' के जीवन का महत्त्वपूर्ण पहलू सामने आता है, जो महान पतिव्रता होते हुए भी उसे अपने जीवन से निराश होना पड़ा। सीता एक आदर्श तथा पवित्र नारी होते हुए भी उसे अपने पति से दूर रहना पड़ा। अपनी पवित्रता की सच्चाई के लिए सीता को अग्निपरीक्षा देनी पड़ी। सीता, उच्चकुलीन, सुसंस्कारित होने के कारण उसने न पति का विरोध किया और न समाज का । सहनशील होने के कारण वह अन्याय को चुपचाप सहती रही । 'सीता' अपने पति राम पर गर्व महसूस करती थी, उसे अपने पति पर अभिमान था, जो महान, आदर्श, सर्वश्रेष्ठ पुरुष थे। अपने पति के राजतिलक की बात सुनकर सीता का मन आनंद तथा हर्ष से भर जाता है। अत्यानंद से सीता ने अपने अलंकार खबर लानेवाली दासी को भेंट स्वरुप दे दिए। सीता, अपने पति के गौरव में ही अपना गौरव मानती है, परंतु अचानक मंगलधुन बंद हो जाने से सीता के मन में आशंका निर्माण हो जाती है, जैसे - ''बाजे बंद हो गए, क्या अभिषेक में कोई विघ्न आ गया?''[16] अपने पति के प्रति अटूट प्रेम के कारण और अर्धांगिनी होने के नाते सीता का मन इस बात को झट से जान जाता है, जो बात सत्य हो जाती है, राजतिलक रुक जाता है। राजतिलक रुकवाने के कारण सीता अपने पति जैसी ही विचलित नहीं होती। वह अपने पति के सुख में ही अपना सुख मानती है। राम के साथ चौदह वर्ष वनवास के लिए जाती है। सीता का कथन है, ''मैं तो आपकी सहधर्मिणी हूँ। तभी तो मुझे साथ चलना होगा। मेरे लिए वही महल है।''[17] लक्ष्मण भी अपनी भाभी के मत से प्रसन्न थे, वे भी रोहिणी-चंद्रमा, वृक्ष-लतिका, गजराज-हाथिनियाँ का सुंदर उदाहरण देते हैं, जो पति-पत्नी के अटूट बंधन को स्पष्ट करते हैं। सीता अपने पति

के साथ वन के दुखों में भी सुखों का अनुभव करती है। अतः बिना अपराध के ही, अग्निपरीक्षा के बाद भी सीता को अपने पति से निर्वासित होना पड़ा।

(ब) पतिता :-

नारी रुपों में पतिव्रता नारी के दर्शन के साथ-साथ कभी पतिता नारी का रुप भी दिखाई देता है। जो अपने पति को धोखे में रखकर किसी और से अनैतिक संबंध प्रस्थापित करती है। जो प्यार पति को देना चाहिए वह किसी और को देती है और कभी-कभी अपने संबंधों को छुपाए रखने के लिए पतिव्रता का ढोंग करती है, सिर्फ पत्नी नाम का धर्म निभाने की नकल करती है।

'राई और पर्वत' में एक ढोंगी पत्नी का धर्म निभाने का प्रयास फूलवती करती है। फूलवती का विवाह एक अधेड़ वृद्ध गिरिधर पंडित से हुआ था। फूलवती की उम्र इकत्तीस-बत्तीस और गिरिधर पंडित करीब पचपन के थे। गिरिधर पंडित अपनी पत्नी को बहुत मानते थे, क्योंकि बूढ़े की ब्याहता होने के कारण वह भी अपने आपको बूढ़ी मानने लगती है। परंतु साज-सिंगार में कमी नहीं थी। जब खेत का काम बंद हो जाता तो फूलवती उदास रहती थी क्योंकि खेत का काम बंद होने से पंडित दिनभर घर में ही रहते थे इसी कारण हरदेव से मुलाकात नहीं हो सकती थी। खेत का काम शुरु हो जाने पर फूलवती अपनी बेटी तथा पति के प्रति ममता, प्रेम, सेवा की झूठी शान दिखाती थी। बूढ़े की ब्याहता और विधवा बेटी की माँ होने के कारण वह अपने-आपको एक बैरागन मानने लगती है और सीधी-साधी रहने लगती है, परंतु उसकी आँखों में आग दिखाई देती थी जैसे वह इसतरह नहीं रहना चाहती। फूलवती, अपना समय पूजा-पाठ तथा मंदिर में बिताने लगती है। गाँव के लोग भी फूलवती के चरित्र को देखकर 'भली औरत' मानते हैं, किंतु मंदिर

जाकर वह हरदेव से मिलती थी, अपने बीच आए विद्या नाम के काटे को हटाने की नई-नई चालें हरदेव के साथ रचती थी। फूलवती पति और गांववालों के सामने अपना महान रुप पेश करने पर तुली हुई है। गिरिधर पंडित अपनी पत्नी की महानता को देख हमेशा उसकी प्रशंसा करते थे। कभी-कभी पांव भी छूते थे, तो फूलवती पति को रोकती है और अपने आपको नरक तथा अधरम से बचाती है।

हरदेव को मुँहबोला भाई से परिचित कराती है, हर रोज उसके घर आता है, दिन में भी और रात में भी लेकिन इस बात का पता गिरिधर पंडित को अंत तक नहीं चलता। गिरिधर पंडित की बीमारी में फूलवती, पंडित की बहुत सेवा करती है। अपने अनैतिक संबंध को छिपाए रखने और अपने बचपन के साथी तथा प्रेमी के साथ मौज उड़ाने के लिए सेवा का नाटक करती है। फूलवती का कथन है, "लड़का जोड़ का है। अगर यह राजी हो जाए तो भला क्या है डर दुनिया में? मैं तुझे आराम से बुला सकुंगी और यह भी दुख न पाएगी। दुनिया दिखावे की है। लुगाई को खसम की आड़ और धरम की ठाड़ फिर क्या डर है?"[18] फूलवती विद्रोह की आग में जल रही है, साथ-साथ पति और समाज को भी धोखा दे रही है, जला रही है। फूलवती, बूढ़े की विवाहिता होने के कारण उसे अपने विवाहित अवस्था के प्रति घृणा निर्माण हो जाती है, जिससे उसका जीवन निराशमय होता है, परंतु धूर्तता के साथ उसने अपने पति के मन में तथा समाज में अपने पतिव्रता रुप के प्रति पक्का विश्वास पैदा किया है। फूलवती अपने रुप को स्पष्ट करती हुई कहती है, "गांव में है कोई जो मुझपर उँगली उठा दे। दुनिया पाप ही से बनी है। इसमें जिसका दिखावा जितना बड़ा है, उतना ही बड़ा उसका धरम है। आज तू बदनाम हुई है। कल तू नेकनामी चाहे तो न मिलेगी। कुछ भी कर, मगर दुनिया की ओट देकर कर ।"[19]

फूलवती, पत्नी होने के नाते देवर के हाथों हुई बलात्कार की शिकार की बात से पति को अंधेरे में रखती है। जब विद्या द्वारा फूलवती के अनैतिक संबंध का राज खुलता है तो फूलवती भी अपमानित हो अपने-आपको दोषी मानती है। उसका कथन है, ''तुम बुढ्ढे हो, इसलिए मैंने बचपन का साथी पाकर जवानी की मद में पाप किया और आज तक तुम्हारी और गांव की आँखों में धूल झोंकती रही.. ... जिस लड़की को तुम पापिन कहते हो, वह तो मेरे कारण पाप की गली में डूबी है।''[20] जैसे ही फूलवती अपनी पतिव्रता के ढोंग का राज खोलती है, गिरिधर इस हादसे के कारण मृत हो जाते हैं। फूलवती भी अपमानित हो अपने पतिव्रता का राज समाज में खुल न जाए इस डर से पति के साथ सती जाती है और समाज उसे अंत तक पतिव्रता मानता है।

'कल्पना' में निर्मला भी विवाहित होते हुए भी अन्य किसी के साथ प्रेम-संबंध रखती है। निर्मला गर्ल स्कूल में पढ़ाती है। बी.ए. कर रही है, और एक व्यस्त वकील की पत्नी है, फिर भी वह विवाह पूर्व प्रेम-संबंध को विवाह के बाद भी रखती है। निर्मला एक विवाहित डॉक्टर से प्रेम-संबंध रखती है। अपने पति को अंधेरे में रख निर्मला, डॉक्टर के घर आती-जाती है, डॉक्टर के साथ घूमती है, सिनेमा देखती है। निर्मला, डॉक्टर के साथ ऐसा व्यवहार करती है, जो उसे अपने पति के साथ करना चाहिए । निर्मला बिना किसी झिझक से डॉक्टर के साथ घूमती है। डॉक्टर से मिलने रात में भी अकेली आती है, वह डॉक्टर पर अविश्वास दिखाती है क्योंकि उसे लगता है कहीं डॉक्टर अपनी पत्नी के कारण अपने को भूल न जाए । निर्मला, डॉक्टर के बिना नहीं रह सकती। उसका कथन है, ''सच कहती हूँ, जिस दिन तुम मुझे दगा दोगे, मैं उस दिन जहर खा लूँगी। तुम तो पुरुष हो। मैं स्त्री हूँ। तुम जो कर रहे हो, वह सब यह समाज क्षमा कर सकता है, लेकिन मैं

अपने पति से धोखा कर रही हूँ और मेरे लिए कोई भी सहारा नहीं है।''[21] निर्मला को भी एहसास है कि उसने अपने पति को धोखे में रखकर किसी और से संबंध रखा है, पर वह दिल से मजबूर है, कमजोर है। नीला के सामने भी वह कबूल करती है कि वह डॉक्टर के बिना नहीं रह सकती, वह अपने और डॉक्टर के सिवा किसी और की चिंता नहीं करती, तो वह अपनी पति की चिंता क्यों करने लगी? किंतु नीला के विशाल हृदय और समझदारी, त्याग के सामने निर्मला अपने-आपको अपमानित समझती है, अब वह अपने पति के पास लौटने का धीरज नहीं करती और जहर पीकर अपने प्रेमी के साथ जीवन ही नष्ट करती है। निर्मला ने डॉक्टर की मजबूरी के कारण वकील से विवाह किया था, डॉक्टर ने ही विवाह करवाया था। निर्मला ने स्वच्छंद वृत्ति और उच्छृंखल व्यवहार को अपने जीवन में स्थान दिया था, जिसके कारण अंत में उसे अपने जीवन को मिटाना पड़ता है।

3.2.1.4<u>सास</u> :-

नारी के पारिवारिक रुप में सास का रुप भी विशेष महत्त्व रखता है। जो पहले किसी की माँ थी, बेटे के विवाह के बाद उसे सास का रुप निभाना पड़ता है।

'राई और पर्वत' में विद्या सास की दुलारी थी। सास, विद्या के माँ का प्यार देती थी। विद्या के काम में हाथ बंटाती थी। विद्या को अपने साथ खेत ले जाती थी। परंतु यही ममता भरा सास का हृदय बेटे की मृत्यु के बाद विद्या के प्रति कठोर बन जाता है सास अपने बेटे की मृत्यु का कारण विद्या को ही मानती है। अब वह विद्या के साथ संबंध तोड़ना चाहती है। विद्या ससुराल के घृणास्पद तथा अपवित्र वातावरण का विरोध करती है, तो सास कहती है, ''हराम की जनी। यहाँ

पाप बताती है। निकल मेरे घर से।"[22] विद्या की सास अपने कर्तव्य को भुल जाती है, और अपने सास के अधिकारों पर सबसे अधिक ध्यान देती है।

'कल्पना' में नीला, श्रीमती सुंदरम और राजम में सास विषय पर चर्चा होती है। श्रीमती सुंदरम एक कहावत के आधार पर कहती है लड़की को सास ही ठीक करती है। राजम सास के नाम से डरती है।

3.2.1.5 बहू :-

बेटी अपने माँ-बाप का घर छोड़ पराए घर में आती है। पराए, अजनबी लोगों में घुलमिल कर रहती है। ऐसी बहू ससुराल वालों से सम्मान प्राप्त करती है, तो कभी अपमानित हो जाती है।

"राई और पर्वत" में विद्या 'बहू' रुप में अपने-आपको समर्पित करती है। पति मास्टर होने के कारण सबकी प्यारी-दुलारी हो जाती है। विद्या ने ससुराल की मान-मर्यादा को जल्दी सीख लिया था। वह ससुर तथा देवर के सामने घूँघट निकालती थी। घर के काम करती, सास के साथ खेत पर जाती थी। परंतु पति की मृत्यु के बाद बहू को दासी, नौकरानी माना जाने लगा। 'विधवा' नाम से विद्या को ताने दिए जाने लगे। ससुर तथा जेठ उसे छेड़ते थे, किंतु अपने ससुराल की मान-मर्यादाओं के कारण वह चुपचाप सहती रही। ससुरालवाले विद्या से संबंध तोड़ना चाहते हैं। अतः विद्या ससुरालवालों से तंग आकर मायके चली जाती है।

3.2.1.6 देवरानी - जिठानी :-

नारियों में जिस प्रकार बहन-बहन का प्यार भरा संबंध होता है, उसी प्रकार देवरानी और जिठानी में बहन जैसा प्यार धीरे-धीरे विकसित होता है।

'राई और पर्वत' में भी जिठानी और देवरानी बड़े लाड़ प्यार से

एक-दूसरे के साथ रहती हैं। विद्या रोटियाँ सेकती, सास परोसती और जिठानी दूध औटाती थी, किंतु देवर की मौत के बाद देवरानी को परिवार में कोई मूल्य नहीं रहता, ऐसे ही विद्या का हाल हुआ। जिठानी सब काम छोड़ सिर्फ साज-सिंगार में लगी रहती है, और देवरानी (विद्या) सबेरे उठकर सारे काम अकेली करती थी। कुछ दिनों बाद तो जेठ के कहने पर जिठानी देवरानी पर हाथ उठाती है। फिर भी देवरानी, विद्या सहती है। विद्या के विचार से 'सहने का नाम जिंदगी था'। जिठानी, देवर की मौत के बाद विधवा देवरानी को अशुभ मानने लगती है। और विद्या मौन रुप से कठोर-से-कठोर अत्याचारों को सह लेती है।

3.2.1.7 भाभी :-

परिवार में भाभी का रुप बड़ा प्यार भरा होता है। 'राई और पर्वत' में विद्या की जिठानी भी अपने देवर तथा विद्या के साथ स्नेह तथा हँसी-मजाक किया करती है। विद्या का पति 'उमेश' अपनी भाभी का लाड़ला था। भाभी, देवर को विद्या के नाम से चिढ़ाती हुई कहती है, "लालाजी! क्यों न अपना तबादला यहीं करा लो। साइकल चलाते-चलाते थक न जाते होंगे।"[23] तो देवर शरमाता था। भाभी, अपने देवर के सुख की कामना करते हुए उनके लिए पूरनमासी के दिन व्रत भी रखना चाहती है। ऐसा हँसी-मजाक परिवार में खुशियाँ लाता है।

कभी-कभी भाभी-देवर के रिश्ते में ढीलापन, उच्छृंखल व्यवहार दिखाई देता है, जो घृणास्पद और लज्जित माना जाता है। जैसे - 'राई और पर्वत' में फूलवती और आर्य समाजी समाज सुधारक देवर में अनैतिक संबंध पैदा हुए थे। परिणामतः विद्या का जन्म होता है, परंतु फूलवती अपने पति गिरिधर से इस बात को छुपाके रखती है। विद्या के जन्म के बाद भी भाभी और देवर के रिश्ते की पवित्रता

का ढोंग रचाया जाता है। दोनों भी देवर-भाभी का रिश्ता बनाए रखते हैं और जब फूलवती को हरदेव का सहारा मिलता है तो वह हरदेव का सहारा लेकर अपने देवर को जहर देकर मार डालती है।

3.2.1.8 <u>प्रेमिका</u> :-

संसार में प्रत्येक प्राणी के हृदय में प्रेम का भाव विद्यमान रहता है। नारी अपने प्रेमिका रुप में पुरुष के स्वप्नों को सफल बनाने में सहायता करती है, प्रेरक शक्ति बनती है। परंतु कभी-कभी उसे परिस्थितिवश अपने प्रेमी को पाने के लिए व्यक्तिगत तथा सामाजिक संघर्ष करना पड़ता है। जब कोई प्रेमिका प्रेम में सफलता हासिल करने में असफल होती है तब वह अपने जीवन को मिटा देती है।

अ) <u>सफल प्रेमिका</u> :-

'पतझर' में मोहिनी जगन्नाथ नामक युवक से प्यार करती है। वह कायस्थ ब्राह्मण था। जातिभेद तथा रुढ़ि-परंपरा के कारण मोहिनी अपने प्रेमी को पा नहीं सकती परंतु वह अपने प्रेमी को खोना भी नहीं चाहती। इस अंतर्द्वंद्व के कारण मोहिनी मानसिक विकृति की शिकार बन जाती है। डॉ.सक्सेना नामक मनोविज्ञान तज्ञ से इलाज करवाती है जो मोहिनी के प्यार को पाने के लिए उसकी सहायता करते हैं। परंतु डॉक्टर, मोहिनी की मानसिक स्थिति के साथ ही उन्हें अपने कर्तव्यों का एहसास दिलाते हैं, जिससे मोहिनी अपने अस्तित्व को महसूस करती है। भारतीय नारी होने के कारण वह जगन्नाथ को ही पति रुप में चाहती है, जिसके साथ मोहिनी ने तन-मन से प्यार किया था। वह सुसंस्कारित होने के कारण अपने प्रेमी को ही पति रुप में चाहती है, उसे ही अपना लेती है।

'कल्पना' में निर्मला भी एक सफल प्रेमिका के रुप में प्रस्तुत हुई है। निर्मला एक डॉक्टर से प्रेम करती थी, जो विवाह पूर्व प्रेम को विवाह के बाद भी पूर्ववत रखती है। निर्मला अपने जीवन में अपने प्रेमी को पति रुप में तो नहीं पा सकी परंतु वह अपने मन में किसी और को स्थान भी नहीं दे सकी इसी कारण वह विवाह के बाद भी डॉक्टर से मिलने आती है। डॉक्टर के संपर्क में ही रहना चाहती है। डॉक्टर विवाहित होने के कारण उसका मन आशंकित रहता है कि कहीं डॉक्टर अपनी पत्नी के कारण उसे भूल न जाए। और इसी अंतर्द्वंद्व के साथ वह आधी रात में भी बिना डर से डॉक्टर को मिलने आती है। वह तन तथा मन से डॉक्टर की हो जाती है। समाज की दृष्टि से वकील निर्मला के पति है, परंतु निर्मला डॉक्टर को ही पति रुप में स्वीकार कर लेती है। अंत में डॉक्टर के साथ निर्मला जहर खाकर आत्महत्या करती है। निर्मला अपने प्रेमी को नहीं पा सकी परंतु अपने जीवन का अंत तो प्रेमी के साथ ही कर लेती है।

ब) <u>असफल प्रेमिका</u> :-

नारी जीवन में सफल प्रेमिका के साथ-साथ असफल प्रेमिका के रुप भी दिखाई देते हैं। सामाजिक बंधन, पारिवारिक बंधन तथा परिस्थितिवश अपने प्रेमी से बिछड़ जाती है। परिणामतः उनका जीवन कुंठित, निराश, मानसिक विकृति से ग्रस्त बन जाता है। अपने संस्कार, मान-मर्यादा के कारण नारी विरह को सहती है जैसे -

'राई और पर्वत' की फूलवती अपने बचपन के साथी और प्रेमी 'हरदेव' से बिछड़ जाती है। परिणामतः वह मानसिक रुप से विकृत बन जाती है। विवाह के बाद भी वह हरदेव से प्रेम-संबंध रखती है। अपने पति तथा समाज को धोखा देकर मुँहबोले भाई के नाम से हरदेव के साथ संबंध रखती है। विवाहपूर्व फूलवती, हरदेव

को अपना पति मानती थी किंतु फूलवती के चाचा पैसों के लालच से फूलवती का एक अधेड़ वृद्ध के साथ जबरदस्ती विवाह करा देते हैं। फूलवती विवाह के बाद अपने संबंधों की पोल खुलने के कारण तथा अपने प्रेमी के प्रेम पर संदेह प्रकट होने के कारण अपमानित रुप में वह अपने मृत पति के साथ सती जाती है।

'पतझर' में मोहिनी के पूर्व जन्म के आधार पर उसे युगों-युगों से अपने प्रेमी तथा प्रेम से वंचित दिखाया है। चार हजार साल पूर्व अपने पूर्व जन्म में मोहिनी 'प्रावर्णा' के रुप में थी। वह 'मंदार' से प्रेम करती थी। उसके गीतों को चाहती थी। परंतु पिशाच जाति की होने के कारण नीलुख नामक बलवान पुरुष ने उसका छल से हरण कर धोखे से उसके नारीत्व को नष्ट किया था। समाज के नियमानुसार जो पुरुष स्त्री को छल से हरा लाता है और धोखे से उसके नारीत्व का भोग कर लेता है, वही नारी का पति माना जाता है इसी कारण 'प्रावर्णा' अपने प्रेम में असफल रहती है।

पचास साल पूर्व 'रमिया' नामक एक भंगन के रुप में उसका दूसरा जन्म था। रमिया भी एक गोरे से युवक को चाहती थी। परंतु अपने नौकरी पेशे के कारण और जातिभेद के कारण रमिया अपने प्रेम में असफल होती है। रमिया के प्रेमी का विवाह दूसरी लड़की से होता है जो उसकी जाती की थी और रमिया अपने प्रेम के खातिर अपनी माँ से मार खाती है।

'कल्पना' में भी लेखक ने इतिहास के आधार पर 'मेघदूत' वर्णित यक्षी का वर्णन किया है, जो एक असफल प्रेमिका के रुप में सामने आती है। यक्षी अति सुंदर है, जो सज-धजकर अपने प्रिय का संदेश लानेवाले मेघों की राह देखती है, परंतु कुछ क्षणों बाद उसका मन व्यथा से भर जाता है। वह अपने भवन में लौटकर

शय्या पर सिर रखकर रोती है। वह अपने प्रेमी के शाप के दिन देहलीज पर एक-एक फूल चढ़ाकर गिनती है, किंतु यक्ष हमेशा के लिए यक्षी से बिछड़ जाता है और यक्षी का प्रेम असफल हो जाता है।

3.2.1.9 <u>सखी / सहेली</u> :-

नारी अपने मन की बात अपने में ही सीमित नहीं रख सकती, चाहे वह सुख हो या दुख। नारी का सखी रुप एक ममता भरा, प्रेममय होता है जो एक-दूसरे के अंतर्मन की बात जान सकता है। सखी रुप एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल हो दुख-दर्द को बाँट लेता है।

'कल्पना' में नीला और राजम में सखी, सहेली रुप का परिचय होता है, जो कुछ दिनों में ही एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं। राजम बहुत बातूनी थी उसने अपने स्वभाव से नीला को कच्चे धागे की तरह बांध लिया था जैसे - वे दोनों बहुत ही पुरानी सहेलियाँ हो। कुछ दिनों में ही राजम ने नीला का अपने ही घर में पराई औरत सा रुप देखा। राजम बातों-बातों में डॉक्टर और निर्मला के संबंध को जानना चाहती है किंतु नीला राजम से छुपाती है। एक दिन राजम, नीला की स्थिति को जान जाती है, जिससे अप्रत्यक्ष रुप में नीला का विद्रोह राजम के सामने प्रकट होता है। राजम का मन पिघलता है, नीला के प्रति सहानुभूति से भर जाता है। राजम हर वक्त नीला की सहायता करती है, उसे खुश देखना चाहती है। डॉक्टर और निर्मला से वह घृणा करने लगती है। नीला को अकेला नहीं रहने देती। उसका कथन है, "मैंने कहा कि जब तक डॉक्टर साहब नहीं आते, मेरे घर चल। वहीं बातें करेंगे।"[24] नीला और डॉक्टर की रात में बहस चलती है तो राजम आवाज सुनकर जाग जाती है, और नीला के घर आकर बेहोश होकर गिर रही नीला को

सँभालती है। राजम, नीला को खुश देखना चाहती थी, लेकिन नीला की किस्मत में खुशियाँ नहीं थी।

'अवदातिका' के सहारे सीता और अवदातिका के बीच सखी रुप का परिचय होता है। अवदातिका बहुत ही दुखी और चिंतित है क्योंकि अवदातिका को लगता है कि, वह रंगशाला से जो अशोकपत्र का वल्कल ले आयी थी, उसे अपनी सखी सीता द्वारा पहनने के कारण ही उसे वनवास भुगतना पड़ा। अवदातिका रंगशाला से मजाक में वल्कल ले आयी थी परंतु उसके मन में डर था और उसी डर को जानकर सीता वल्कल लौटाने को कहती है। परंतु सीता को वल्कल पसंद आता है। वल्कल पहने सीता के सौंदर्य की अवदातिका प्रशंसा करती है। सीता के साथ अवदातिका के सखी रुप में मित्रता, सदभाव, निस्वार्थ प्रेम देखने में आता है। वह एक-दूसरे की शुभचिंतिका हैं। अवदातिका को दुख है कि मैंने ही लाए वल्कलों के कारण सीता को दुख झेलना पड़ा। वह सीता की सहेली होने के नाते महाराज दशरथ, माता कौशल्या, माता सुमित्रा की सेवा करना चाहती थी, परंतु महाकवि व्यास ने उसकी इच्छा को अधूरा ही रखा।

'बकुलावलिका' भी मालविका की सखी है, वह मालविका के सुख की कामना करती है। बकुलावलिका आचार्य गणदास से मालविका के नृत्याभ्यास के संबंध में पूछती है जो कार्य राणी को बताया था और आचार्य की प्रसन्नता देखकर, प्रसन्नोद्‌गार, सुनकर वह सखी मालविका को सुनाना चाहती है। बीच में विदुषक मिलता है, जो बकुलावलिका की सहायता से मालविका पर मोहिती हुए राजा की इच्छा को पहुंचाना चाहता है। उसका कथन है, "तुम तो मालविका की प्रिय सखी हो। क्या राजा का संवाद उस तक नहीं पहुंचा सकती।"[25] और बकुलावलिका न

चाहते हुए यह काम करने के लिए तैयार हो जाती है। उसे डर है कि यह आसान काम नहीं है अगर राणी को पता चल गया तो मुसीबत हो जाएगी। बकुलावलिका, मालविका से मिलने जाती है, जिसे देखकर मालविका प्रफुल्लित, हो जाती है उसका स्वागत करते है। बकुलावलिका मालविका के पास बैठकर राणी के भेजे नूपुरों को अपने हाथ से मालविका के पैरों को रंगाकर पहना देती है। और उसके सौंदर्य की प्रशंसा करते हुए कहती है, ''सखी, अपना पाँव देखो। राघलेखा से चरणों की शोभा कैसी अनिंद्य हो गई है।''[26] सखी रुप एक-दूसरे के सुख-दुख में समा जाती है, कभी हास-परिहास करती है, अपनी सखी के शृंगार का ध्यान रखती है। नारी का ऐसा सखी रुप भी नारी जीवन में विशेष महत्त्व रखता है।

3.2.1.10 विधवा :-

नारी जीवन में नारी के सबसे पीड़ित तथा तनावग्रस्त संघर्षमय रुप विधवा का है, जो उसे मानसिक तथा शारीरिक रुप में भी जीने नहीं देता अगर वह अनपढ़ और असहाय हो तो और विघातक होता है। 'राई और पर्वत' की विद्या को भी अशिक्षा के कारण तथा आर्थिक निर्भरता के कारण विधवा जीवन का दुख सहना पड़ता है। विद्या को समाज के साथ-साथ अपने परिवारवाले सगे-संबंधियों से भी त्रस्त होना पड़ता है। विद्या के पति की मृत्यु के बाद ही विद्या को पराया समझा जाता है। विद्या के विधवा होते ही ससुराल में उसका महत्त्व कम हो गया। सास ताने देने लगी और घर का सारा काम विद्या को ही करना पड़ता है। जिठानी दिन रात साज-सिंगार करती रहती है। ससुर तथा जेठ वासना भरी नजर से देखते, उसे छेड़ते भी थे। विद्या को घर में एक दासी से भी बदतर जिंदगी जीनी पड़ती है, विद्या थककर मायके जाना चाहती है तो सास कहती है, ''तो ले जाओ समधी। घर ले

जाओ। अपने हाथ से सानी करके खिलाना। यहाँ कौन चिंता है। अपने यहाँ विधवा के दूध की चाहना नही।''[27] विद्या ससुराल के अपवित्र वातावरण से थककर मायके जाती है।

विद्या को मायके में भी संघर्षमय जीवन जीना पड़ता है। मायके में बेटी के विधवा होने का दुख पिता के सिवा किसी को न था। फूलवती अपनी विधवा बेटी को बोझ मानने लगती है किंतु विद्या भी अपने घरवालों पर बोझ नहीं बनना चाहती। पढ़-लिखकर मास्टरनी बनना चाहती है। फूलवती, विद्या के इस विचार का विरोध कर उसका पुनर्विवाह करना चाहती है लेकिन विद्या पुनर्विवाह का विरोध करती है। सुसंस्कारित होने के कारण वह अपने विधवा जीवन को कायम रखना चाहती है।

विद्या अपने विधवा जीवन को भाग्य मानती है। उसका कथन है, ''भाग में होता दादा, तो यही सुहाग क्यों उजड़ता? अब तो जितने दिन बाकी हैं योंही गुजर जाएँगे। पुरनविवाह तो सरधा की बात है। हौंस बाकी हो तब न?''[28] वह रामभरोसे पर संतप्त हो जाती है कि रामभरोसे एक विधवा से प्यार करता है। विद्या के विचार से विधवा किसी से प्यार नहीं कर सकती और न उसे विवाह करना चाहिए। विद्या का विधवा रुप एक समस्या बन जाता है, जिसका कारण उसे अपने जीवन में अंत तक संघर्ष करना पड़ता है।

3.3 परिवारेतर रुप :-

समाज परिवार से बनता है परिवार स्त्री-पुरुष के दांपत्य जीवन से बनता है। अतः स्त्री-पुरुष समाज से संबंधित है। नारी को परिवार के साथ-साथ समाज में

भी विविध रुपों को अपनाना पड़ता है, जिसके कारण नारी की विवशता, असहायता, आर्थिक पराधीनता आदि हैं। नारी अपना जीवन सँवारने के लिए, समाज में अपना स्थान निर्माण करने के लिए तथा अपने नारीत्व की रक्षा के लिए विविध रुपों को अपनाती हैं जो पारिवारिक न होकर परिवारेतर माने जाते हैं। आलोच्य उपन्यासों में आए परिवारेतर रुप निम्न प्रकार से -

3.3.1 दासी :-

'कल्पना' में 'अवदातिका' अध्याय में 'चेटी' सीता की दासी है। सीता, चेटी को भी अपनेपन से मान-सम्मान देती है। सीता, अपने वल्कल पहने सौंदर्य का वर्णन चेटी से भी सुनना चाहती है। चेटी कहती है, "बोलू भी क्या? मेरा तो रोआं-रोआं यह देखकर पुलक उठा है।"[29] अपनी स्वामिनी के सौंदर्य का वर्णन वह अपने हृदय से करती है। सीता को दर्पण लाकर देती है। चेटी, जो खुश खबर ले आयी थी, वह सीता के सौंदर्य वर्णन में भूल जाती है। सीता उसे याद दिलाती है तो चेटी राम के राजतिलक और महाराज दशरथ के सकुशल होने की खुशखबर सुनाती है। खुशखबर सुनकर सीता प्रसन्न होती है और अपने आभूषण निकालकर चेटी को उपहार स्वरुप दे देती है।

'बकुलावलिका' भी विदिशा नगर की राणी की दासी थी। जो अपने कर्तव्य के प्रति सतर्क है। बकुलावलिका पर एक कार्य सौंपा जाता है कि मालविका की नाट्य शिक्षा के बारे में पूछताछ करना। विदूषक बकुलावलिका की सहायता से राजा के संवाद मालविका तक पहुँचाना चाहता है और राजा मालविका की भेट को राणी से छुपाके रखना चाहता है। बकुलावलिका घबरा जाती है, क्योंकि महारानी निरंतर मालविका की देखभाल करती है जैसे - साँप किसी खजाने की रक्षा करता

है। बकुलावलिका का कथन है,"राजसभा है, राज्य का अंतःपुर है। पचास लोग इसलिए डोलते हैं कि हमसे जान-पहचान हो जाए तो देवी और महाराज से मुलाकात हो जाए। लेकिन कोई यह नहीं सोचता कि हमें तलवार की धार पर रहना पड़ता है।"[30] और वह अपने कार्य को पूरा करने जाती है।

3.3.2 <u>कलंकिता</u> :-

नारी को कलंकिता नाम से परिवार तथा समाज में त्रस्त होना पड़ता है और तनावपूर्ण, संघर्षमय जीवन बिताना पड़ता है। जीवन की छोटी सी भूल तथा परिस्थितिवश नारी को कलंकित होना पड़ता है, चाहे वह दोषी हो या निर्दोष।

'राई और पर्वत' में विद्या को विधवा जीवन के साथ-साथ बाहरख्याली, बदनाम औरत माना जाता है। विद्या के मायके लौट आने पर गांव के लोग विद्या के संबंध में उल्टी-सीधी बातें करते हैं। माँ भी विद्या के स्वभाव-गुणों को दोष देती है कि तेरे इसी स्वभाव के कारण ससुराल से निकाल दी गई होगी। विद्या, अनजाने में भंग मिश्रित प्रसाद को खाकर रामभरोसे के हाथ से रबड़ी चखती है तभी गांववालों और पिता के सामने पकड़ी जाती है, और विद्या की किस्मत ही बदल जाती है। पिता के साथ गांववाले विद्या को कलंकिनी, कुलटा मानने लगते हैं। पिता का कथन है, "कुलटा! मर क्यों न गई तू? कौन बैठा था तेरे पास..... सारी औरतें नाम ले-लेकर हँसती जा रही थी तेरा। तभी ससुराल को नाम लगाकर आ गई। वहाँ पर कतर दिए होंगे उन्होंने। सोचा होगा, यहाँ मौज की छनेगी। तेरी सतवंती माँ सुनेगी तो क्या कहेगी - सारा गांव थू-थू करेगा अब।"[31]

विद्या का जीना मुश्किल हो जाता है। सारा गांव, पिता साथ ही माँ भी 'विधवा की आग' के नाम से उसे कलंकित मानती थी, परंतु विद्या, माँ के कारण ही कलंकित हो गई थी। हरदेव, विद्या को बरबाद करना चाहता था। उसका विरोध करने की कोशिश में विद्या के हाथों हरदेव का खून हो जाता है और हत्यारिन नाम से एक और कलंक विद्या के माथे पर मढ़ दिया जाता है। गांव के लोग विद्या को बात-बात पर कुत्सित तथा घृणित भाव से टोकते थे जैसे "ताई ने कठोरता से कहा, यार को तो जीता खा गई। तेरी अम्मा ने जिसे भैय्या बनाया, उसी पैडोल गई तू। और वह डरा तो उसे तूने मार डाला अपनी चंडाली में और जादू कर दिया उस पै जिसे उस हरदेव ने पाल पोसकर बड़ा किया था, और अब आई जमाने को रंग दिखाके सतवंती।"[32] ऐसी बातों से विद्या का मन पसीज जाता है। इन्हीं बातों को सुनकर विद्या अपनी माँ की अपवित्रता और अपनी पवित्रता को गांव के सामने खोलना चाहती है परंतु गांव के लोग उसकी छाया को भी देखना पाप समझते हैं। विद्या के कैदी जीवन, साथ ही पुलिस लोगों पर भी लांछन लगाते हैं कि जेल और थाने में क्या किसी औरत की इज्जत बच सकती है? विद्या ऐसे बोलों से अंदर-ही-अंदर घुटती रहती है, तिलमिला उठती है। विद्या की छोटी-सी भूल ने उसके जीवन को बरबाद किया था लेकिन इसमें विद्या की तो गलती नहीं थी।

3.3.3 कातिल तथा हत्यारिन :-

नारी जीवन के अनेक रुपों में यह भी एक रुप देखने को मिलता है। अगर उसने अपनी जान बचाने, इज्जत बचाने के लिए इस रुप को अपनाया है तो यह मनुष्य धर्म ही है, इसमें कोई गैर बात नहीं है। 'राई और पर्वत' में ऐसा ही रुप प्रगट हुआ है। विद्या, विधवा जीवन की असहायता के कारण समाज, परिवार के

लांछन को चुपचाप सहती रहती है, परंतु अपने चरित्र की पवित्रता को बनाए रखने के लिए कुछ भी कर सकती है। रामभरोसे विद्या को छेड़ता है, वह विद्या का हाथ पकड़ता है तभी विद्या के हाथ कुछ टटोलने लगते हैं। अंधेरे में उसके हाथ दरात आ जाता है, वैसे ही दरात से रामभरोसे के कंधे पर वार करती है। वह कराह उठता है।

जब हरदेव उसे बरबाद करने आता है तब विद्या का ऐसाही रुप दिखाई देता है। फूलवती के सती जाने की खबर से हरदेव तड़प उठता है। प्रतिरोध की आग में वह विद्या को मिटाने के इरादे से आ जाता है। हरदेव आगे बढ़ता है, विद्या को अपने बाहों में पकड़ लेता है, वह छटपटाने लगती है। उसका विरोध करती है। उसे नोच डालती है। हरदेव की पकड़ बढ़ जाती है, तभी विद्या के हाथ दरात लगता है और विद्या जोर से हरदेव के गर्दन पर वार करती है, एक चीख निकलती है, फिर भी विद्या पूरे जोश से, जोर से दरात पर दरात मारे जाती है हरदेव की लाश नीचे गिर जाती है। खून, नदी के पानी जैसा बहने लगता है। लोगों में खबर फैल जाती है, लोगों की भीड़ में विद्या ने आराम से लेकिन मन में ढ़ेर सारा विद्रोह लेकर कहा था, "देखो। सती की बेटी हूँ मैं कुलटा। यह मेरा यार बनाने आया था। मेरा घमंड मोड़ने, मेरा परमात्मा लुटने......।"[33]

3.3.4 <u>कैदी रुप</u> :-

नारी जीवन में जब किसी नारी पर खून तथा कत्ल का प्रसंग आता है तो जैसे वह टूट जाती है खून करते समय भावावेश में उसके हाथ से यह गुनाह तो हो जाता है परंतु जब कैदी के रुप में उसे जीना पड़ता है तो उसे अपना जीवन असहनीय तथा घृणित लगता है। वह अपने जीवन को मिटा देना चाहती है। ऐसा ही

जीवन 'विद्या की किस्मत में आता है, जो हरदेव के कत्ल के जुर्म में उसे कैदी बनाया जाता है।

विद्या के लिए जेल एक नई दुनिया थी। विद्या ऊपर से तो कैदी रुप से घबराती थी परंतु भीतर से उसे वह मामुली लगता है क्योंकि कम-से-कम वहाँ लोगों की खिचखिच तो नहीं सुननी पड़ती। विद्या को अब जीवन से कोई आकर्षण तो नहीं था, वह अपने जीवन से ऊब गई थी। खून करने के कारण वह अब फाँसी की सजा चाहती थी। जेल में जो औरतें कैदियों की देखभाल करती थी, वे बड़ी कठोर थी और कैदी औरतों के साथ भी कठोरता से पेश आती थी। विद्या जैसी अन्य कैदी औरतें थी, उनके जीवन के अपने-अपने दुख थे परंतु विद्या अकेली रहती थी, उन औरतों में विद्या को दिलचस्पी नहीं थी। अन्य कैदी औरतें विद्या को जान गई थी कि विद्या खतरनाक औरत है क्योंकि उसने खून किया है और इसी कारण वे विद्या के साथ स्पष्टता से व्यवहार करती थी। फाँसी की सजा से एक मन से विद्या डरती थी, परंतु दूसरे मन से उसके जीने का अर्थ ही क्या था?

विद्या अकेली तथा चूप रहती थी। उसका मन अंदर-ही-अंदर खाए जा रहा था कि उसे जेल में रहना पड़ रहा है। विद्या खून को बहुत बुरा काम समझती है, जो स्वयं उसने अपने हाथ से किया था। किंतु उसने अपने इज्जत के खातिर यह गुनाह किया था। दिनभर ऐसी बातों को लेकर वह सोचती रहती है और रात नीद में सपने भी ऐसे ही आते तो अचानक वह हड़बड़ाकर उठती, चिल्लाती 'नहीं-नहीं'। जेल की दूसरी कैदी 'अनारो' विद्या को जगाकर पूछती तभी विद्या को होश आ जाता था। रामभरोसे, जेलर से मिलकर विद्या की हिफाजत की बिनती करता था। वह विद्या को निर्दोष साबित करना चाहता है किंतु विद्या, मन से आशंकित है कि उसने खून किया

है, तो फौसी ही होगी, वह छूट नहीं सकती। रामभरोसे विद्या को कायदे-कानून की बात सूनाता है कि औरत अगर अपनी इज्जत बचाने के लिए कत्ल भी कर दे तो कोई हर्ज नहीं सिर्फ यह साबित होना चाहिए कि उसने इज्जत बचाने के लिए कत्ल किया है। विद्या ने भी अपने इज्जत के खातिर ही हरदेव का खून किया था। रामभरोसे, विद्या की तरफ से गवाही देता है, और हरदेव को दोषी ठहराता है और विद्या निर्दोष छूटती है।

3.4 शाश्वत रुप :-

नारी के चारित्रिक गुणों के आधार पर उसके शाश्वत रुप प्रकट होते हैं। नारी के सुसंस्कारित, सहनशील, स्वाभिमानी, असहाय, पवित्र आदि विशेषताओं से नारी के व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। नारी के शाश्वत रुप समाज में आदर्श स्थापित करते हैं। राघव जी के उपन्यासों में नारी की चारित्रिक विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित शाश्वत रुप दिखाई देते हैं।

3.4.1 सुसंस्कारित एवं सहनशील :-

निम्न - मध्य वर्गीय नारी में संस्कार तथा सहनशील वृत्ति रहती है। अपनी इस वृत्ति के कारण नारी को कभी-कभी बहुत दुख झेलने पड़ते हैं। कभी किसी नारी में यह गुण अधिक दिखाई देता है, तो कभी कम। 'राई और पर्वत' की विद्या सुसंस्कारित एवं सहनशील नारी है। कम उम्र में विवाह होते हुए भी अपने ससुराल की मान-मर्यादा को उसने जल्दी ही सीख लिया था इसी कारण वह ससुराल वालों की दुलारी हो जाती है। किंतु विवाह के चार साल बाद ही विधवा हो जाती है। विधवा जीवन में भी वह ससुराल वालों की सेवा करती है, ताने सुनती है, उसे

मार भी खाने पड़ती है किंतु संस्कार और सहनशील होने के कारण कुछ नहीं कहती। अनजाने में ही रामभरोसे के हाथ से रबड़ी चखने का और गांववालों के सामने पकड़ी जाने के कारण वह गांववालों, माता-पिता के घृणित, वांच्छनीय व्यवहार को अंत तक सहती है। हरदेव के कत्ल के जुर्म के कारण वह फाँसी की सजा चाहती है। संस्कारित होने के कारण वह जेल से छुटने के लिए रामभरोसे जैसे गुंडे का सहारा लेने से बेहतर वह मर जाना पसंद करती है। अपनी माँ के दूध का एहसास रखकर और 'माँ' नाम की महत्ता के कारण वह अपनी माँ के अपवित्र तथा बाह्याड़ंबरी रुप को अंत तक छुपाके रखती है। गांववालों के अत्याचार को सहती रहती है। रामभरोसे की सहायता से उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। वह अपने संस्कारित मन से रामभरोसे को पहचानती है और उसकी जान बचाने के लिए लाठी के प्रहार अपने ऊपर लेती है और रामभरासे को गांव छोड़ने को कहती है।

'पतझर' की मोहिनी भी एक सुसंस्कृत और सहनशील युवती है, जो अपने प्रेम को समाज तथा माता-पिता की मान-मर्यादा के लिए भूलना चाहती है। वह माँ-बाप का विरोध नहीं करती। मोहिनी को अपने माँ-बाप के प्रति कर्तव्यों का एहसास है। वह समझदार होने के कारण और सहनशीलता के कारण अपने प्रेम को गूंगेपन में दबाना चाहती है। परिणामतः मानसिक रुग्ण बन जाती है। संस्कारित होने के कारण वह प्रेमी को ही पति रुप में स्वीकार करना चाहती है। उसका कथन है, "मैं हिंदू स्त्री हूँ और हिंदू स्त्री तन-मन से एक ही बार अपना पति चुनती है। इसलिए अब मैं पीछे नहीं हट सकती क्योंकि यह मेरे लिए अधर्म होगा।"[34]

मोहिनी के चार हजार साल पूर्व जन्म में 'प्रावर्णा' के नाम से उसका सुसंस्कारित तथा सहनशील रुप दिखाई देता है, जुसे अपने प्रेमी को चाहकर भी किसी

और को अपनाना पड़ता है। समाज के नियमानुसार उसे पति रुप में सहन करना पड़ता है। न वह उस पति का विरोध करती है और न ही समाज का विरोध करती है। अपनी आँखों के आँसुओं के सिवा वह कुछ नहीं दिखाती।

पचास साल पूर्व 'रमिया' नाम से उसे अपने प्रेमी से जातिभेद तथा नौकरी पेशे के कारण बिछड़ना पड़ता है। वह किसी और से विवाह नहीं करना चाहती। अतः उसे प्रेम की खातिर मार खानी पड़ती है।

'कल्पना' उपन्यास की नीला भी सुसंस्कृत, शिक्षित, सहनशील नारी होने के कारण उसे अपने जीवन में दुःखों का सामना करना पड़ता है। सहनशीलता के कारण मन में घुटती रहती है। संस्कारवश अपने पति का खयाल रखती है, सेवा करती है, उस पर विश्वास रखती है। नीला अपने पति के अनैतिक संबंधों तथा अपने ऊपर हुए अन्याय को बताना भी नहीं चाहती। वह अपने पति की बदनामी में ही अपनी बदनामी मानती है।

'कल्पना' के सहारे यक्षी के भी सहनशील रुप का वर्णन हुआ है। जो समाज के बंधन तथा शाप के कारण अपने प्रेमी से बिछड़ने का दुख सहती रहती है। मेघ की राह देखते-देखते निराश होती है। रोकर अपना दुख व्यक्त करती है।

'महासती सीता को भी सुसंस्कृत होने के कारण अपने पति, राम से भी ज्यादा दुख . सहन करने पड़ते हैं। अपने पति की छाया बनकर बन में रहना पड़ता है, रावण की बंदिनी बनकर अपनी पवित्रता की रक्षा के लिए अपनी शक्ति के सहारे रावण का मुकाबला करना पड़ता है। अपनी पवित्रता की सच्चाई साबित करने के लिए अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है। फिर भी सीता को पति द्वारा निर्वासित बनकर ही

रहना पड़ता है। सुसंस्कृत तथा सहनशीलता के कारण स्त्री, पुरुष तथा समाज के अन्याय/अत्याचार का विरोध नहीं कर सकती अतः अपने जीवन को दुखी और निराशमय बना देती है।

3.4.2 त्यागमयी तथा स्वाभिमानी नारी :-

नारी गुणों की कोमलता, माधुर्य, त्याग, समर्पण आदि बातों के कारण, साथ ही सुसंस्कृत होने के कारण नारी अपने जीवन को त्यागमयी बना देती है। तन, मन, धन से वह परिवार तथा पुरुष के प्रति अपना आत्मसमर्पण करती है। इस आत्मसमर्पण से कभी उसे लाभ होता है तो कभी उसका जीवन नीरस बन जाता है।

'राई और पर्वत' की विद्या का जीवन त्यागमयी है। ससुराल में ससुरालवालों के प्रति आदर तथा सम्मान दिखाती है। मायके में अपने माता-पिता की बेइज्जती न हो इसका खयाल रखती है। इसी कारण वह किसी को भी दोष देना नहीं चाहती। अपना जीवन त्यागना चाहती है। अपनी माँ के व्यभिचारी रुप के प्रति लांछन लगाना नहीं चाहती।

विद्या, आत्मसम्मानी तथा स्वाभिमानी नारी है। विद्या को अपने मायके के प्रति स्वाभिमान है। वह ससुरालवालों से ज्यादा मायकेवालों को प्यारभरे और व्यवहारवाले समझती है। विद्या, विधवा जीवन में भी स्वाभिमानी तथा स्वावलंबी जीवन बिताना चाहती है इसी कारण वह पुनर्विवाह का विरोध करती है और पढ़-लिखकर शिक्षिका बनना चाहती है। विद्या का कथन है, "दादा। मैं ब्याह न करुँगी। मेरा तो विधाता ने इतना ही सुहाग लिखा था। अब वह लुट गया सो लुट गया । मुझे तो दरजा सात तक पढ़ा दो। लड़कियों के किसी मदरसे में मास्टरनी बन जाऊंगी।"[35]

परंतु विद्या की इच्छा अधूरी रह जाती है। विद्या अपने पवित्र चरित्र, शील को बचाने के लिए रामभरोसे पर दरांत से वार करती है, हरदेव का खून करती है। अपने स्वाभिमान को जगाए रखने के लिए अपनी माँ का भी कड़ा विरोध करती है। विद्या, रामभरोसे की सहायता नहीं चाहती।

'कल्पना' में नीला भी अपनी इच्छा-आकांक्षा के सपनों को सजाती है, परंतु परिस्थितिवश उसके सपने चूर-चूर हो जाते हैं। नीला, डॉक्टर पति को पाकर खुश थी, लेकिन कुछ ही दिनों में उसे अपने पति के निर्मला के साथ प्रेम-संबंधों के बारे में पता चलता है। अपने पति के दुर्व्यवहार पर मन-ही-मन घुटती रहती है, परंतु कभी पति से झगड़ा नहीं करती। नीला अपने अधिकार निर्मला को देना चाहती है।

अपने पति के प्रेम-संबंधों का विरोध नहीं करती। मन-ही-मन संतप्त हो जाती है। किंतु अपने स्वाभिमान के कारण चूप रहती है। वह पति की आत्महत्या के बाद पति से घृणा करती है, क्योंकि पति और उसकी प्रेमिका ने समाज के डर से अपनी जिंदगी को मिटा दिया था।

महासती सीता भी पति के साथ सहधर्मिणी के नाते वन जाना चाहती है और अपने पति के साथ ही एक गौरवमयी जिंदगी बिताना चाहती है। राजमहल के सूखों का त्याग करती है। अपने अलंकार वस्त्रादि को निकालकर एक वल्कल को उच्चकुलोत्पन्न होने के कारण सीता सारे दुखों से दूर थी परंतु अपने पति के वनवास की आज्ञा से उसके मन में इन दुखों को सहने की जैसे शक्त्ति आ जाती है और उसे वन भी महल जैसा लगता है ।

3.4.3 अपमानित तथा पवित्र नारी :-

अपने पवित्र रुप को बचाने के लिए नारी को परिवार तथा समाज से अपमानित होना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है । संघर्ष करते-करते कोई नारी सफलता हासिल करती है तो कोई अपना जीवन समापन कर देती है।

'राई और पर्वत' की विद्या भी समाज तथा घरवालों से अपमानित, पवित्र नारी है, जो परिवार तथा समाज के साथ संघर्ष करते-करते थककर परिवार और समाज के प्रति विद्रोह करती है। विद्या का जीवन संघर्ष सोलह वर्ष में ही शुरू होता है। पति की मृत्यु बाद ससुरालवाले उसे बुरी नजर से देखते हैं। अतः विद्या ससुराल छोड़ती है। किंतु मायके में भी वह चैन से नहीं रह सकती। माँ के अपने मुँहबोले भाई के साथ प्रेम संबंध से विद्या अपनी माँ से घृणा करने लगती है, दोनों में जैसे दुश्मनी पैदा हो जाती है । विद्या की माँ, विद्या को अपने प्रेम के बीच का काटा समझकर उसे हटाने के लिए नई-नई चालें चलती है, उसे बदनाम करती है, विद्या भी बूरी तरह फँस जाती है। परिणामतः अंत तक विद्या समाज में पापिन, कलंकिनी, कुलटा नाम से अपमानित होती रहती है। लेकिन अपने मन की पवित्रता से अपने शील का रक्षण करती है।

रामभरोसे जब विद्या को छेड़ता है तो विद्या दरात से उसे मारती है। विद्या को बरबाद करने आए हरदेव का वह दरांत से ही खून कर देती है। जैसे विद्या की पवित्रता को स्पष्ट करते हुए रामभरोसे का कथन है, ''यह घाव कित्ता अच्छा था । पुर गया, पर मन पर गहरा घाव कर गया। औरत को ऐसा ही होना चाहिए। पवित्तर, छूए तो जैसे आग की लौ की तरह जला दे।''[36] विद्या अपनी पवित्रता के संबंध में बड़ी सतर्क रहती है। वह अकेली ही घर में रहती थी,

रामभरोसे उसकी पूरी तरह से सहायता करता था परंतु उस पर भी वह शक करती थी। विद्या को पापी रुप की देन माँ, हरदेव, रामभरोसे की तरफ से मिली है, जो उसे अकेली को सहना पड़ता है।

3.4.4 असहाय तथा निर्भिक :-

नारी को परिवार तथा समाज में अबला माना जाता है, असहाय माना जाता है। 'राई और पर्वत' की विद्या भी असहाय ही है। माँ-बाप होते हुए भी उसे एक असहाय नारी का जीवन बिताना पड़ता है। आर्थिक रुप से माता-पिता पर निर्भर होने के कारण, साथ ही विधवा जीवन के कारण उसका मन भी असहाय तथा निराश बनता है। माँ, अपने स्वार्थ के लिए विद्या को बदनाम कराती है, रामभरोसे के साथ अनैतिक संबंध के लिए उकसाती है, लेकिन विद्या भी अपने माँ के अनैतिक संबंधों का राज पिता के सामने खोलती है, तो माँ-बेटी जैसे दुश्मन बन जाती है । विद्या निर्भिकता से अपनी माँ को पापिन, दोषी कहती है। विद्या का कथन है, ''तूझे जाँचती थी। तू जानती है मैं पापिन नहीं हूँ। पाप तुझमें है, मुझमें नहीं। मुझे बदनाम कराया है तूने। फिर भी तू समझती है कि मैं तुझसे डर जाऊँगी?''[37] विद्या असहाय होते हुए भी निर्भय लगती है।

जब रामभरोसे, फूलवती और चाचा के अन्याय की कहानी सुनाता है तब विद्या को समाज के प्रति घृणा निर्माण हो जाती है। रामभरोसे को बचाने के लिए विद्या निर्भयता से अंधेरे में बढ़ती है और रामभरोसे को मारने आए म्यापा, चिरंजी के लठ्ठ प्रहार अपने ऊपर लेती है। समाज के सामने विद्या, रामभरोसे को निर्भयता से अपनाती है। विद्या की असहायता और निर्भिकता का रुप परिस्थितिनुसार, प्रसंगानुकूल दिखाई देता है।

3.4.5 विद्रोही तथा आधुनिक नारी :-

नारी को अपनी परिस्थिति तथा मानसिक विवशता के कारण आधुनिक विद्रोहिणी रुप को अपनाना पड़ता है। 'राई और पर्वत' की विद्या अन्याय के प्रति अपना विद्रोही तथा प्रतिशोधिता रुप प्रकट करती है। माँ की अपवित्रता विद्या के मन में घृणा पैदा करती है, जिससे फूलवती की स्वच्छंद वृत्ति पर बंधन आ जाता है, और वह विद्या के हटने की राह देखती है। माँ-बेटी में झगड़े होते रहते हैं। विद्या, फूलवती की ही बेटी होने के कारण अपने माँ के दांव को उस पर ही पलटा देती है। अपने माँ के विवाह बाह्य संबंधों को समाज के सामने खोलना चाहती है। अपनी माँ की असलियत जानने के लिए विद्या माँ से झूठ बोलकर अपने-आपको बदनाम औरत साबित करती है, तो प्रसन्नता से माँ विद्या को छाती से लगा लेती है और ब्याह करने की सलाह देती है, आजाद होने को कहती है किंतु विद्या व्यंग्यात्मक बोलकर अपनी माँ के अपवित्र रुप को नष्ट करना चाहती है।

विद्या, निष्कलंक निर्दोष होते हुए भी उसे समाज से अपमानित होना पड़ता है । लोग उसे चैन से जीने नहीं देते, उसकी सहायता करनेवाले रामभरोसे को भी मारना चाहते हैं । अतः विद्या सोच-समझकर समाज के प्रति विद्रोह करती है। समाज की झूठी शान को मिटा देती है और अपना विद्रोहिणी रुप धारण कर रामभरोसे को हमेशा के लिए अपनाती है।

'फूलवती' का भी रुप विद्रोही तथा प्रतिशोधिता के रुप में प्रस्तुत हुआ है, जो अपने पर हुए अन्याय का बदला लेना चाहती है। फूलवती को हरदेव से अलग कर एक वृद्ध के साथ विवाह किया था, साथ ही ससुराल आते ही देवर के हाथों बलात्कार की शिकार हो जाती है, विद्या उसी की संतान थी। अतः फूलवती

प्रतिहिंसा से जल उठती है और अपने इस अन्याय का बदला समाज के साथ-साथ पति, बेटी और देवर से लेती है। वह अपने प्रतिशोधी रुप को दिखाते हुए कहती है,"मुझे दुनिया ने कुचला है धरम की आड़ में, तो मैं भी धरम की मिर्च लोगों की आँख में डालकर सबकों कुचलूँगी । जो भी मेरे रास्ते में आएगा उसे कुचल दूँगी।"[38]

'पतझर' की मोहिनी संस्कारित होने तथा समाज के दबाव के कारण अपने स्वतंत्र विचारों को, अपने स्वतंत्र जीवन की इच्छाओं को गूंगेपन में दबाती है, परंतु जब डॉ.सक्सेना उसकी मानसिक विकृति देख उसके विचारों को धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं तब मोहिनी का विद्रोही तथा आधुनिक नारी रुप सामने आता है, जो शिक्षित होते हुए भी घरवालों की मान-मर्यादा तथा समाज के दबाव के कारण छुपा हुआ था । मोहिनी शिक्षित और आधुनिक विचारों की होने के कारण वह अपनी इच्छा विरूद्ध किसी और लड़के से शादी नहीं करना चाहती, वह अपनी मर्जी से शादी करना चाहती है। डॉक्टर की सलाह से तथा प्रेरित करने पर मोहिनी अपने माँ-बाप के पुराने विचारों का विरोध करती है। जिससे अपने माँ-बाप तथा समाज व्यवस्था के प्रति मोहिनी का विद्रोही रुप अप्रत्यक्ष प्रकट होता है।

'कल्पना' में नीला भी शिक्षित होते हुए अपने आधुनिक और विद्रोही रुप को प्रकट करती है। नीला का रहन-सहन सीधा-साधा था, परंतु विचार से व्यावहारिक, समझदार लगती है। पुरुष का सिगरेट पीना, धोती-कुर्ते का पेहराव उसे अच्छा नहीं लगता। वह गहनों को पहनना बर्बर युग की निशानी मानती थी। अपने विचार से वह स्त्री और पुरुष की समानता को मानती थी। वह अपने पति के प्रेमिका के साथ खुले व्यवहार से अंदर-ही-अंदर जलती रहती है। वह अपने मन का विद्रोह अपनी सहेली राजम के सामने उगलती है। आधी रात में अपने पति से मिलने

आई प्रेमिका को घर में बुलाकर उन दोनों की इच्छाओं को पूरा करने का हक देती है और सलाह रुप में अपने मन का विद्रोह भी प्रकट करती है।

नीला स्वतंत्र विचारों की आधुनिक नारी है। वह प्रेम संबंध का विरोध नहीं करती। नीला के विचार से, डॉक्टर और निर्मला को समाज का विरोध कर अपना जीवन एक-दूसरे के साथ बिताना चाहिए था। वह आत्महत्या को कायरता, मूर्खता मानती थीं । नीला शिक्षित और समझदार होने के कारण उन दोनों की बदनामी में अपनी बदनामी मानती है। अपने विद्रोह को मन में रखकर जीवन में आते दुख को सहती है।

निष्कर्ष :-

साहित्यिक क्षेत्र के उपन्यास, कहानी, नाटक विधा में समाज जीवन का चित्रण प्रस्तुत करते समय लेखक, नारी-चित्रण में नारी के विभिन्न रुपों को चित्रित करता है।

राघव जी ने भी अपने इन तीन उपन्यासों में नारी चरित्र के विभिन्न रुपों को विभिन्न कोनों से उभारा है जिससे नारी के पारिवारिक, परिवारेतर और शाश्वत रुप उभर कर आए हैं। इन रुपों के जरिए राघव जी ने नारी की भावनाओं, विचारों, वास्तविक स्थितियों को प्रस्तुत किया है। साथ ही सामाजिक कुरीतियों, विषमताओं, मनुष्य जीवन की पीड़ा को स्पष्टता से चित्रित कर नारी विकास की ओर समाज को परिलक्षित किया है। राघव जी ने अपने इन उपन्यासों में नारी के विविध रुपों के साथ ही नारी के दो विरोधी रुपों को भी चित्रित किया है, जो परिस्थितिवश परिवर्तित होते हैं । साथ ही राघव जी ने युगों-युगों से विविध रुपों में अपना

बलिदान, त्याग, प्रेम, ममता, सुख-दुख, अन्याय, पीड़ा को सहते-सहते अपने जीवन की सार्थकता निभाती आई हुई नारी का चित्रण किया है। राघव जी ने पारिवारिक संबंधों की दृष्टि से नारी के माँ, कन्या तथा पुत्री, पत्नी, सास, बहू, जिठानी, देवरानी, प्रेमिका, सखी, विधवा आदि रुपों को चित्रित किया हैं।

माँ रुप में राघव जी ने स्त्री के दो विरोधी रुप वात्सल्यमयी और व्यभिचारी रुप को चित्रित किया है। वात्सल्यमयी माता अपनी संतान से अपने वात्सल्य, ममता से अटूट स्नेह करती है। वहीं माँ परिस्थितिवश तथा अपने क्षणिक सुखों के कारण अपने व्यभिचारी रुप से संतान को गलत राह पर चलाना सीखाती है, संतान से नफरत करती है। जैसे 'राई और पर्वत' की फूलवती अपनी संतान विद्या को बदनाम करती है।

राघव जी ने पत्नी रुपों में नारी के ही पतिव्रता और पतिता इन दो विरोधी रुपों को प्रस्तुत किया हैं, जो परिस्थिति तथा मजबूरी के कारण परिवर्तित होते हैं। पतिव्रता में त्याग, समर्पण, सेवाभाव आदि दिखाई देते हैं, तो कभी-कभी ऐसी ही पत्नी, पति के प्रति उदासिनता, नफरत के कारण अपने पति को धोखे में रख किसी और के साथ प्रेम-संबंध रखती है। नारी के सास, बहू, जिठानी, देवरानी आदि रुप ससुराल के वातावरण को दर्शाते हैं। प्रेमिका रुप में राघव जी ने दो विभिन्न रुपों को प्रस्तुत किया है । एक जो अपने प्रेम में सफलता हासिल करती है, तो एक असफलता पाती है। नारी के सखी तथा सहेली रुप में प्यार भरा व्यवहार है, जो कभी सुख को तो कभी दुख को प्रस्तुत करता है। सहेलियाँ एक-दूसरे के प्रति स्वार्थहीन, शुभ-कामना युक्त भाव रखती है ।

राघव जी ने 'विधवा' नारी की असहायता को अंत में मिटाकर उसके

अंधेरे जीवन में उजाला प्रस्तुत किया है, जो उद्देश्य तथा संदेश रुप में व्यक्त हुआ है । इस रुप के साथ ही लेखक ने समाज की कुरुपता पर गहरा प्रहार किया है जो एक असहाय नारी की सहायता करने के बजाए उसे त्रस्त किया जाता है। उसका शोषण किया जाता है ।

उनके उपन्यासों में परिवारेतर नारी रुपों में परिस्थिति के अनुसार और प्रसंगानुसार कलंकिता, दासी, कातिल तथा हत्यारिन और कैदी आदि रुप व्यक्त हुए हैं।

उन्होंने ऐसा नारी-चित्रण कर सामाजिक विषमता की ओर अंगुली निर्देश किया है ।

नारी के शाश्वत रुपों से नारी की चारित्रिक विशेषताओं का परिचय हो जाता है । जैसे - सुसंस्कारित तथा सहनशील, स्वाभिमानी तथा त्यागमयी, पवित्र, असहाय तथा निर्भिक और विद्रोही तथा आधुनिक रुप प्रस्तुत हुए हैं ।

राघव जी के उपन्यासों की नायिका भारतीय संस्कृति से प्रभावित हैं । राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर', 'कल्पना' में नारी के अबला, असहाय रुप प्रस्तुत हुए हैं , लेकिन राघव जी ने उन रुपों को सबला बनाने का प्रयास किया है। नारी के असहाय, अबला रुप को मिटाने और सबला रुप को प्रकट करने का संदेश दिया है और समाज की कुरुपता पर प्रहार कर उनके दुष्परिणामों की ओर निर्देश किया है। राघव जी के उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रुपों के संबंध में पाठक के मन में कौतूहल निर्माण होता है। अतः नारी की मूक विवशता के सहारे राघव जी ने अपने उपन्यासों में नारी के यथार्थ संघर्ष और सामाजिक परिस्थितियों, रुढ़ियों के

सामने एक आदर्श की प्रतिष्ठा स्थापित की है । परिणामतः नारी का त्याग, सहनशीलता, मर्यादा की रक्षा आदि अनेक विशेषताओं के कारण इनके उपन्यासों में सोद्देश्यता आई हैं ।

: संदर्भ सूची :

(1) डॉ.विक्रमसिंह राठोड, राजस्थान की संस्कृति में नारी, पृ. 100

(2) महादेवी वर्मा , श्रृंखला की कड़ियाँ, पृ.18

(3) डॉ.श्यामबाला गोयल, भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य में नारी भावना, पृ.197

(4) रांगेय राघव, कल्पना, पृ.18

(5) वही, राई और पर्वत, पृ.144

(6) वही, पृ.54

(7) वही, पृ.64

(8) वही, पृ.72

(9) डॉ.श्यामबाला गोयल, भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य में नारी भावना, पृ.253

(10) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.144

(11) वही, पृ.138

(12) वही, पतझर, पृ.62

(13) डॉ.श्यामबाला गोयल, भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य में नारी भावना, पृ.199

(14) रांगेय राघव, कल्पना, पृ.28

(15) वही, पृ.32

(16) रांगेय राघव, कल्पना, पृ.56

(17) वही, पृ.64

(18) वही, राई और पर्वत, पृ.63

(19) वही, पृ.69

(20) वही, पृ.79

(21) वही, कल्पना, पृ.31

(22) वही, राई और पर्वत, पृ.50

(23) वही, पृ.47

(24) वही, कल्पना,पृ.26

(25) वही, पृ.90

(26) वही, पृ.94

(27) वही, राई और पर्वत, पृ.50

(28) वही, पृ.52

(29) रांगेय राघव, कल्पना, पृ.55

(30) वही, कल्पना, पृ.92

(31) वही, राई और पर्वत, पृ.66

(32) वही, पृ.122

(33) वही, पृ.88

(34) रांगेय राघव, पतझर, पृ.120

(35) वही, पृ.55

(36) वही, राई और पर्वत, पृ.161,162

(37) वही, पृ.72

(38) वही, वही, पृ.71

****